लवथवती विक्राला आरती PDF

|| लवथवती विक्राला आरती ||

लवथवती विकारा ब्राह्मी माला।
विष्णु कंठी काली तीन आंखों वाली लपटें।
लावण्यासुंदर मस्तकी बेबी।
तेथुनिया जल सरमल वाह ज़ुल्ज़ुल्हा .. 1 ..

जय देव जय देव जय श्री शंकर।
आरती ओवलुन तुज करपुगौरा..ध्रु...

करपुगौरा भोला नैनी विशाल।
अर्धांगी पार्वती सुमना की माला।
विभूति का अतिप्रवाहित शितिकांठा नीला।
ऐसा शंकर उमावेलहला को सुशोभित करता है। जय। 2

सागरमंथन देवी दैत्य द्वारा किया गया था।
उस समय असमय ही हंगामा हो गया।
वे राक्षसों की पूजा करते थे।
नीलकंठ नाम प्रसिद्ध हुआ। जय। 3

व्याघ्रंबर फणीवरधर सुंदर मदनारी।
पंचानन मनमोहन मुनिजन सुखकरी।
शतकोटि के बीज का उच्चारण।
रघुकुलतिलक रामदास अंत्री।
जय देव जय देव जय श्री शंकर .4

pdfinbox.com